इमाम मो0 बाक़िर (अ0)

की शख़्सियत का इज्तेमाई पहलू

आली जनाब मौलाना सै0 इम्तियाज़ हैदर रिज़वी साहब क़िब्ला

इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) की शख़्सियत के इज्तेमाई पहलू से हमारी मुराद दौराने इमामत में उम्मते इस्लामी के साथ आपका रवैय्या और आप (अ0) का सुलूक क्या है? बारहा इस नुकते के मुताल्लिक़ ताकीद की है कि अइम्मा–ए–मासूमीन एक किताब के मुकर्रर नुस्ख़े की तरह हैं अमल और फ़िक्र में मसावी हैं सिर्फ इस फ़र्क़ के साथ कि मुख़्तलिफ क़िस्म के हवादिस जो कि हर ज़माना में वाक़े होते रहते हैं उनकी वजह से ज़िम्मेदारी और हालात भी मुख़्तलिफ हो जाते हैं।

इस बाब में आपकी समाजी काविशें और इस ज़माने के लोगों के साथ आपकी सामाजियात के मुताल्लिक़ हम इशारा करेंगे।

अः– इमाम सादिक़ (अ0) फरमाते हैं :– एक रोज़ अपने वालिद के पास आया, तो देखा कि आप मदीने के फक़ीरों के दरमियान 8 हज़ार दीनार तक़सीम करने में मसरूफ हैं और फिर 11 आदमियों पर मुश्तमिल एक ख़ानदान को आज़ाद फरमाया जोकि सब के सब गुलाम थे।
(बहारुल अनवार जिल्द–46 बाब अख़लाक़ व सीरत इमाम मो0 बाक़िर)

बः– हसन बिन कसीर कहते हैं:– मैं अबुजाफर मोहम्मद बिन अली (अ0) के पास गया और तही दस्ती और भाई की ज़्यादती की शिकायत की, हज़रत ने फरमाया :– बहुत बुरा है वह भाई जो मालदारी और बेनियाज़ी के आलम में तो तुम्हारे साथ रहे और फक़ीरी और तन्गदस्ती के वक़्त साथ छोड़ दे। फिर आपने अपने गुलाम को हुक्म दिया, वह एक छोटी थैली लाया जिसमें सात दिरहम थे, मुझ से फरमाया :– इसको लो और ख़र्च करो, जिस वक़्त ख़त्म हो जाए तो मुझे बताना।(इरशाद मुफ़ीद, बाब फ़ज़ाएल इमाम मो0 बाक़िर अ0)

सः– अम्र बिन दीनार और अब्दुल्लाह बिन उबैद कहते हैं :– जिस वक़्त मोहम्मद बिन अली (अ0) की ख़िदमत में पहुँचता तो आप पैसा या लिबास या कोई हदिया अता करते और फरमातेः– तुम्हारे यहाँ आने से पहले ही यह तुम्हारे लिए अलग रख दिया गया था।

(इरशाद मुफ़ीद, बाब फ़ज़ाएल इमाम मो0 बाक़िर अ0)

दः– सुलेमान बिन क़रम कहते हैं :– अबुजाफर मोहम्मद बिन अली (अ0) कभी 500, कभी 600 और कभी 1000 दिरहम इनाम के तौर पर हमें अता करते थे, और कभी–कभी अपने भाइयों और अपने एलचियों को हदिया देते या जिनको आप से उम्मीद थी उनके साथ सिल–ए–रहमी करने से नहीं थकते थे। (बहारुलअनवार, जिल्द–46)

हः– आप (अ0) की कनीज़ सलमा कहतीं हैं:– आप (अ0) के भाई या दोस्त जब भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते तो बग़ैर अच्छी ग़िज़ा खाये और उम्दा लिबास हदिया लिए उनको घर से बाहर आने नहीं दिया जाता। मैं आप (अ0) से अर्ज़ करती : मौला थोड़ा सा इन मामलों से बचाकर रखिए, तो आप फरमाते : दुनिया की नेकी भाइयों और दोस्तों को हदिया देने के अलावह और क्या हो सकती है?

सलमा फिर कहतीं हैं :– आप कभी 500 और कभी 600 और कभी 1000 दिरहम अपने दोस्तों और भाइयों को इनाम देते थे। इमाम बाक़िर (अ0) अपने दीनी भाइयों की सोहब्त व हमनशीनी से ख़स्ता नहीं होते थे और फरमाते थेः– अपने दोस्त के दिल में अपनी मोहब्बत का अन्दाज़ा करना चाहते हो तो देखो तुम्हारे दिल में

उसकी किस क़दर मोहब्बत है।

आपके घर कभी नहीं सुना गया कि कहा जाए :– ऐ साएल! खुदा तुझे बरकत दे, या ऐ साएल! यह ले ले बल्कि आप (अ0) फरमाते थे:– उनको उनके अच्छे नाम से पुकारो।(बहारुलअनवार जिल्द–46)

अवाम के साथ आपके सुलूक व रवैय्ये की ये चन्द मिसालें थीं, जिनको आपने मुलाहेज़ा किया।

इमाम (अ0) के रवैय्ये व रविश का सही अन्दाज़ा उस वक़्त पता चलेगा जब इस नुक्ते की तरफ तवज्जो दिलाएँ कि इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) माली लिहाज़ से ऐसे न थे कि दूसरे आपसे हसद करते, बल्कि जैसा कि इमाम जाफर सादिक़ (अ0) फरमाते हैं :– मेरे वालिद अपने घराने में सबसे कम माल रखते थे और सबसे ज़्यादा ख़र्च करते थे।

(अअ्यानुश्शीआ जिल्द–4 पेज–21 प्रकाशन–3)

लिहाज़ा इमाम (अ0) की तरफ से इस तरह की बख़्शिश व अता और इसके साथ सख़्ती और मुश्किल को बर्दाश्त करना, बेइन्तहा दौलत का नतीजा न था, बल्कि आप (अ0) यह सारे इक़दामात बहुत ही कम और महदूद पैसे में करते थे, क्योंकि आप (अ0) के नज़रिये के मुताबिक़ माली कमज़ोरी, इज्तेमाई मुश्किलात को हल करने से फरार होने का सब्ब नहीं बन सकती।

इमाम इस नज़रिये के इन्तेख़ाब के ज़रिए चाहते थे कि माली मुश्किलात में गिरफ्तार अवाम को किसी हद तक नजात दें ख़ास तौर से उन मुश्किलों से जो हाकिमे वक़्त के निज़ाम की ज़ालिमाना सियासत के नतीजे में अवाम के लिए, और ख़ास तौर से शीओं के लिए पैदा हो गयी थीं।

इस मुश्किल के मुताल्लिक हज़रत का सबसे बड़ा नारा रसूले अकरम (स0) का कलाम था।

सबसे मुश्किल तीन काम हैं एक–माल व दौलत में अपने को दोस्तों के साथ मसावी रखना, दो–लोगों के हुक़ूक़ अदा करना, तीन–हर हालत में ख़ुदा की तरफ तवज्जो रखना। (इरशाद मुफीद)

इमाम बाक़िर (अ0) को बहुत इश्तियाक़ था कि अपने बाईमान पैरोंकारों को लोगों के साथ समाजियात का सबसे अच्छा तरीक़ा सिखाएँ। इन तालीमों का कुछ नमूना मुलाहेज़ा फरमाएँ :–

तीन चीज़ें दुनिया व आख़ेरत में नेक शुमार की गयी हैं। एक–जिसने तुम पर सितम किया उसको माफ कर देना, दो–जिसने तुमसे ताल्लुक़ तोड़ा तो उसके साथ ताल्लुक़ बरक़रार रखना, तीन– जो तुम्हारे साथ जिहालत के साथ पेश आया हो उसके साथ मेहरबानी से पेश आना। (तोहफुल उकूल)

जो भी अपने मुसलमान भाई की मदद करने से गुरेज़ करे या उसकी ज़रूरत को दूर करने (भले ही वह ज़रूरत पूरी हो या न हो) की कोशिश छोड़ दे, तो वह ऐसी ज़रूरत में गिरफ्तार होता है कि अजर का तो सवाल ही पैदा नहीं होगा बल्कि गुनाह करने वाला भी हो जाता है, और जो भी बन्दा राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने में कन्जूसी करेगा उसका कई गुना खुदा की नाराज़गी के राह में ख़र्च कर देता है। (तोहफुल उकूल, हराफी)

आप (अ0) की एक बहुत ही मशहूर आदत का यहाँ तज़किरा मुनासिब होगा :–

किसी नसरानी ने आप (अ0) की इहानत की ग़र्ज़ से कहा :– आप (अल्लाह की पनाह) ''बक़र'' (यानी बैल) हैं? तो आप (अ0) ने फरमाया:– मैं बाक़िर हूँ।

तुम बावरचिन के बेटे हो?

हाँ! मेरी माँ खाना पकाती थीं।

तुम उस औरत के बेटे हो जिसकी जिल्द सियाह और जो बेकार बातें करती थीं?

अगर तूने दुरुस्त कहा हो तो ख़ुदा मेरी माँ की मग़फिरत करे और अगर झूठ कहा तो ख़ुदा तुझ को माफ करे।

(मनाक़िब आले अबी तालिब अ0 जिल्द–3)

उस ईसाई शख़्स ने इमाम बाक़िर (अ0) की शख़सियत व अज़मत व फज़ीलत और आप (अ0) के दीन की हक़्क़ानियत का मुशाहेदा करने के बाद अपने अक़ीदे को छोड़कर आपके हुज़ूर में ही इस्लाम क़ुबूल कर लिया। □□□